

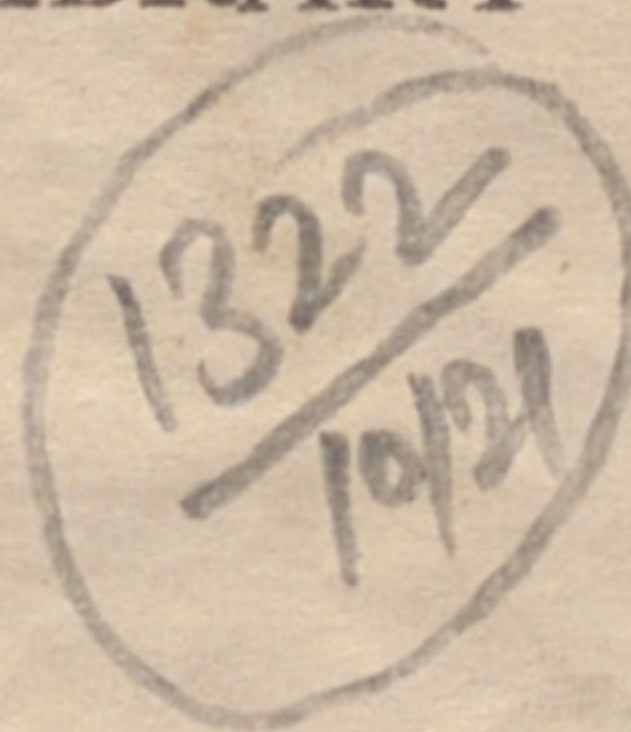
212

H 26P

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi



आह्वानांक Call No. _____

अवधि सं० Acc. No. 212

13

ॐ बन्देमातरम् ॐ

आजादीकी तरंग

900

25 FEB. 1932

Reg. No.

जिसमें राष्ट्रीय जोशोले २५ भजन नाटक लावनी
लहैरकी नई २ तर्जोमें रक्खे गये हैं।

लेखक

श्री पं० कालेसिंह मुबारकपुर

प्रकाशक

सरल हिन्दी पुस्तकालय सोनीपत

मुद्रक—

कुंवर वीरेन्द्र सिंह भदौरिया

राजेन्द्र प्रिण्टिङ्ग प्रस, खारोवाबली देहली।

प्रथमबार २०००

१६३१

मूल्य २/॥

बिला इजाजत कोई न छापे

5166 A3
नं० १ (भगवान प्रार्थना चाल गजल)

दया कर दयालू तुम्ही हो सभी के ।

करो प्रेम प्रेमी बनो मेरे जी के ॥

रहे प्रेम हरदम दिलोंमें तुम्हारा ।

छुटे काम हमसे करें जी बदी के ॥२॥

रहे रास्ता साफ हरदम हमारा ।

फंसे न फंसावेमें फन्दे किसी के ॥३॥

हटे नीत अधरम से भगवन हमारी ।

भरें हो निशाने पड़े नहीं फोके ॥४॥

“काले” ये फन्दा गुलामीका टूटे ।

करें काम चाहें जो अपनी खुशोके ॥५॥

नं० २ (जेल नहीं धर्मशाला हैं । चाल मेरठी लहैर)

जो खतरनाक जेलें थी कर्दई गांधीजीने धर्मशाला ॥ टेक ॥

धर्मशाला बन हुई तैयार, ठैरो भारत के नरनार ।

सुखी होय संसार वक्त, पहलेसा यहां आनेवाला ॥ जो०॥१॥

खुशीं २ जेलोंमें जाओ, वहां महमानी खूब उड़ाओ ।

भजन राष्ट्रीय गाओ वहां, पर कोई नहीं रोकनवाला ॥ जो०॥२॥

जिस दिन मिले टंकीका नहाना, सबेरा होते ही चने चबाना ।

वक्त से पहिले खाना मिले, वहां खड़ा रहे देने वाला ॥ जो०॥३॥

जो कोई वहां पै हो बीमार, डाक्टर हरदम रहता तयार ।

ओढनको काबल चार मिलें, कहै “काले” मारकपुरवाला ॥ जो०॥४॥



न. ३ (धन्य महात्मा गांधी० चाल मेरठी लैहर)

धन्य महात्मा गांधी तेने आजाद बना दिया भारत को ॥टेका॥
गांधी तू भारत का चन्दा, क्या दिया तोड़ गुलामी फन्दा ।
सब चलन हटाकर गन्दा एकदम सिद्ध किया परमारथको ॥धन्य०॥
मुल्कां में होगये नाभी, तुमहो सबके सच्चे स्वामी ।
जो खाते माल हरामी, उनके दूर हटा दिया स्वार्थ को ॥धन्य०॥
कैसी तहरीक चलाई, तैने हर कौम की करी भलाई ।
जितने अँगूँज इसाई, सबकी करदियो बन्द तिजारत को ॥धन्य०॥
फिरे दुनियां में चक्र तुम्हारा, बना है सब की आँख कांतारा ।
छोड़ काले कहै तेरा सहारा, अवश्यो पूजेई ईमारतको ॥धन्य०॥

नं ४ (बिदेशी कपड़ा — चाल गजल)

देश में कपड़ा बिदेशी, जितनां यहाँ आता रहा ।
लूट कर इस मुल्क को, इंगलैंड यूं खाता रहा ॥१॥
पहनते कपड़ा बिदेशी, यों अकल जाती रही ।
होगया इसका चलन, जबसे धर्म जाता रहा ॥२॥
गाय और सुअर की चरबी, की बने हैं पान से ।
दोनों मजबों में तरक्की, ज्यादा ये पता रहा ॥३॥
उठ गई खादी, बिदेशी की तरक्की होगई ।
राज अँगूँजी हुकूमत, का असर छाता रहा ॥४॥
उठते ही इसका चलन, फिरके मुल्क में माल हो ।
रात दिन गांधी व है, यूं काले हमभाता रहा ॥५॥

न' ५ (गुलामी फन्दा-चाल मेरठी लहर)

होगये सब तरिये लाचार, गुलामी फन्दा पड़ने से । टेक॥
 गुलामी तोक पड़ा है भारी, जकड़ कर दुनिया बान्धी सारी।
 नहीं आजाद कोई नर नारी, हकूमतदेश में बड़ने से ॥होगये०
 कैसा बात हुई बेढंगी, हकूमत की शारत हुई चंगी ।
 जालिम नहीं डरै सरकार, कभी अधम पर अड़ने से ॥होगये०
 बठा २ करके रेलों में, बिना खता हूँ से जेलों में ।
 सबकेछोन लिये रोजगार, जोश विद्या का भड़ने से ॥होगये०॥
 लड़ा आपस में भाई भाई, फोड़ तोड़ कर लूट मच ई ।
 कहै काले होगये विसमार, हम आपस में लड़ने से ॥होगये०॥

न' ६ (भगत सिंह को फाँसी-चाल गतल)

छिपके हिन्दोस्तान का सूरज अन्धेरा होगया ।
 रंज का फाँदा सारी दुनिया के तेरा होगया ॥छिपके०॥
 था महीना मार्च तेईस उन्निस्सो इक्तीस शनी ।
 नजरो से गायब भगत सिंह प्यारा मेरा होगया ॥छिपके०॥
 था भरोसा भारी तेरा, हर तरह इस मुल्क को ।
 होते ही तेरे जुदा दुख, अब घनेरा होगया ॥छिपके०॥
 भूलेगे इतने नहीं, इतने ज़मीं और आसमां ।
 हर वशर हर कौम के, गम दिल में तेरा होगया ॥छिपके०॥
 भर मिटेगे नाम तेरे पे, येदिल में ठानली ।
 घर ना बै ठेगे इरादा, "कहै" काले मेरा होगया ॥छिपके०॥

नं० ७ (बालन्दोशर भर्ती चाल मेरठो लहैर)

धर्मकी भरती खुली हुई तुम इसमें नाम लिखा लीजो ॥ टेक ॥

निश्चै कर नाम लिखाओ, तिरछा झण्डा हाथ उठाओ ।
मत दिलमें दहशत खाओ, कुछ करतब कर वीर दिखा दीजो ॥ धर्म ०
ये वक्त हाथ नहीं आना, नहीं हो फिर पीछे पड़तानी ।
करो तपस्वी बाना देशको, तुम आजाद बना दीजो ॥ धर्म ०
इस से बढ़कर न कोई धाम, देश भक्तीमें कर लो नाम ।
मिलकर वीर तमाम देशको, नैया पार लगा दीजो ॥ धर्म ०
करो इस्तेमाल स्वदेशी, जिससे भाग जाय परदेशी ।
“काले” कह चीज विदेशीने, तुम ठोकर से ठुकरा दीजो ॥ धर्म ०

नं० ८ (गाना देवियांका सूतका गोला—चाल रोहतकी)

एरो बहना हो जागा देश आजाद—

सूतका गोला कात बनाओ तुम ॥ टेका ॥

चर्खा बनी है तोप ये कैसा भारी, हो जागी सब बरबाद,

हकूमत इसको राज चलाओ तुम ॥ १ ॥

बचता है एक सालमें अरबों रुपया, जिससे बिका है जायदाद,

देशका लुटता माल बचाओ तुम ॥ २ ॥

टोटा पड़ेगा अंग्रेजको सुनियो बहैना, तुमसे करेंगे फरियाद,

टीक रास्तेपर उनको लाओ तुम ॥ ३ ॥

पहुंचेगा ना नुकसान इतने इनको बहना, टूटी रहेगी मरियाद,

हमहारी जिससे दुःख उठाओ तुम ॥ ४ ॥

गांधीका कहैना करो सब भाई बहने, सारे मिटे'गे फिसाद

कहै काले ढङ्गपर आजाओ तुम ॥ ५ ॥

न० ६ (गाना देवियोंका, चरखेका चाल मेरठी लहर)

सुनो तुम माता बहने करो चर्खेका प्रचार ॥ टेक ॥

छुटी है जबस खादी, देशकी हुई बरवादी

दुखी हुए हैं सभी नरनार ॥ सुनो०

त्यागदो सभी विदेशो, भगे जिससे परदेशो

जब बन्द होय रोजगार ॥ सुनो०

अर्ज सुनो भाई बहने, रवदेशो नख पहने

नहीं बड़ेगी देशमें हार ॥ सुनो०

देशका भगजाये टोटा, किनारो घेड़ो घाटा

कहं चर्खोंमें सिरधार ॥ सुनो०

ये सबसे बढ़कर गाढ़ा, रहे चलनेमें ठाढ़ा

जिसे पहन रहे सरदार ॥ सुनो०

कहे "काले" मरजी थारी, नाव सरजूमें म्हारो

इसे वार करो चाहे पार ॥ सुनो०

न० १० (राज अग्रेंजी आने से-चाल मेरठी लहर)

देश को यूँ होगे बरबादो रात अग्रेंजी आने से ॥ टेक ॥

बदल गया एक दम सभी जमाना, रखते जाम्दिलमेती बाना ।

चाय बिसहृत्का हुआ खाना, दूध उठ गया जमानेसे ॥ १ ॥

गिनती गिननेमें नहीं आती, जूने तक गुरहे पहन बनाती ॥

रखते घड़ी विलायती, फैशन ठोक जंचाने से ॥ २ ॥
 सबने पढ़ २ कर अंग्रेजी, बैठना ले लिया कुरसी मेजो ।
 घटो यों विद्या की तेजी, मंस जीवों का खाने से ॥ ३ ॥
 इसी खर्च से हुए निलाम, पराया हो गया देश तमाम ।
 कहे "काले" होते है बदनाम, गुरु बिना सोखे गाने से ॥ ४ ॥

नं० ११ (नमक का मोरचा चाल मेरठी लहर)

एक दिन में हुआ है जारी मोर्चा नमक बनाने का ॥ टेक ॥
 एक दिन में मचा अचाई, कुदरत कौसी खबर पहोचाई ।
 बने बेधड़क सिपाई, नही डर रहा कुछ थाने का ॥ १ ॥
 थाने और कचेहरी जाके, बेचा नमक को खूब बनाके ।
 देही पर डंडे खाके, खतरा मिटो जमाने का ॥ २ ॥
 पिट २ बने तपस्वी भारी, गवरमेंट जिन्हें सोस भुकारी ।
 बनो ऐसे नर और नारी, वक्त ये फिर नहीं आने का ॥ ३ ॥
 सब ने ऐसा जोर लगाया, नीचा अरविन को दिखलाया ।
 कहे "काले" पास कराया, बना कर घर २ खानेका ॥ ४ ॥

नं० १२ (ऋषो गांधी—चाल मेरठी लहर)

देश में आजादी डड्डा ऋषो गांधी ने वजनाया ॥ टेक ॥
 किया आजादी मन्त्र जारी, दुनिया चेतन होगई सारी ।
 मिट गई एक दम सब संख्या, जयाऊ हक अपने का आया ॥ १ ॥
 ब्याल होते ही छिड़ी लड़ाई, सब मुलकों में मचा अचाई ।
 मोर्चा लगा दिया जंग का, शांती शस्त्र को ठाया ॥ ५ ॥

नमक कानून तोड़ दिखलाया, पिकेटिंग कपड़े ऊपर लाया ।
 शराबें गांधी और भंग का, नाम भारत से उठवाया ॥ ३ ॥
 चलन ठा करके बरबादी का, घुमाया झंडा आजादी का ।
 किया कहे "काले" मुहं बंका, हुकूमत ने नीचा पाया ॥ ४ ॥

नं० १३ (आजादीकी लड़ाई, होलो-वाल-लहर वा आल्हा)

आजादी को छिड़ी है लड़ाई ॥ टेक ॥

आल्हा-पहला धावा नमक बनाकर, गवर्नमेंट को दिया दिखाय ।

करलो जो कुछ तुमसे होवे, अब हम तुमसे डरते नाय ॥

एक रोजमें नमक बनन को लन्दन तक मची अवाई ॥ गो०

दूजा धावा चीज नशीली, एक दम बन्द करी सारी ।

जगह २ पर वालन्टीयों ने, खूब पिकेटिंग किया जारी ॥

नहीं डर रहा गिरफ्तारी का, भागे फिरे पुलिस सिपाई ॥

ताजा धावा माल विदेशी, एक दम बन्द दिया करवाय ।

वालन्टीयों ने घूम २ कर, सब पर मोहर दई लगबाय ॥

इसी वजे से उस लन्दन में गोरों पर पड़ी तवाई ॥ गो० ॥

वेद शास्त्र कहते आये, अधर्म की होती है हार ।

जिसने लिया धर्म का पाला, भवसागर से होगया पार ॥

"काले" कहैं ऋषी गांधी की, दुनिया में फिरे दुहाई ॥ गो०

नं० १४ [जंग की तयारी चाल मेरठी लहेर]

करो जंग की तयारी अपने लीजो भण्डा हाथ उठाये ॥ टेक ॥

छाटे बड़े मर्द और नारी, सब लड़ने की करो तयारी ।

कांग्रेस का हुकुम मान सब दीजो जान अड़ाये ॥ करो०

सत्याग्रही सभी बन जाओ, देशपर अपनी जान लड़ाओ ।

सदा नहीं दुनिया में रहना, क्यों रहे दहशत खाये ॥ करो०

शेर चेतन हो जाओ भारत के, काम अब करलो परमारथ के ।

तोक गुलामी गल से काढ़ो, क्यों रहे दुख उठाये ॥ करो०

देश पहिले सा वीर बनाओ, गुलामी टुकड़े को टुकराओ ।

“काले” कहें धर्म पै मरजा, खुला स्वर्ग में जाय ॥ करो०

नं० १५ (जागा देश हमारा-चाल होली आह्वा)

अब जागा है देश हमारा ॥ टेक ॥

बहुत दिनों से यह सोता था, देश हमारा हिन्दोस्तान ।

बजे नौद की बरबादी का, तुमसे करता साफ बयान ॥

डाकू चोर बड़े घर २ में, ले गये माल लूटकर सारा ॥ अब०

बड़ा लुटेरा का दल भागी, कैसी लूट करी चंगी ।

साहूकर और जमींदारों के घर २ में आगई तंगी ॥

कैसी तंगी हुई मैं बताऊँ, खाने का नहीं होय गुजारा ॥ अब०

लूट २ कर मारे देशको, लन्दन को करा मालामाल ।

धन्य महात्मा गांधी जी की, जिन्हें लूट का आया ख्याल ।

चेतन एकदम करा देश को, पढ़ पैसा जादू मारा ॥ अब०
जगा देश को गांधी जी ने, एक दम से कर दिया होसियार ।
अब नहीं दाव लगे चारों का, खाने तक को हुए जाचार ॥
“काले” कहें बजन वाला है, कोई दिनमें कूँव नकारा ॥ अब०

नं० १६ [बालन्टीयर भर्ती-चाल मेरठो लहर]

दिन पर दिन गुजरा जाय, बक येफेर हाथ नहीं आवेगा ॥ टेक॥
नाम तुम करलो परनार्थ में, हो जाओ दूजे के स्वारथ में ।
बहैती गंगा भारत में, जिनके दिन अच्छे वो न्हावेगा ॥ दिन०
ढेक कर इसमें गोता लाओ, धर्म पर अरनी जान लड़ाओ ।
सब बालन्टीयर बन जाओ, रहे जो फिर पीछे पछतावेगा ॥ दिन ०
तहसील जिला थाने के, दुशमन बन जाओ बेईमाने के ।
दे पैसे चार आने के, मेम्बर बन नहीं धोका खावेगा ॥ दिन०
ज़िन्दा रहने पर आराध, बाद मरने के होजाये नाम ।
दोनों हाथों में आम, मज़ा कहै “काले” खाके पावेगा ॥ दिन०

नं० १७ [डूबे भारत को गांधी०-चाल नाटक]

डूबे भारत को गाँधी बचाया तेने ॥ टेक ॥
बना अवतार कलू में तेरा परकास हुआ,
करे थे काम जो अधर्म के उनका नाश हुआ ।

समझ लीने है जिसने नेम तेरे पास हुआ,
फैर सेवा करन को वो सभी का दास हुआ ॥
सोती दुनिया को आन जगाया तैने ॥ डूबे०

जागा के नींद से अच्छी तरह समझा दिया ।

हमारा हथक था जो वो हमें बतला दिया ।
बना आजाद भारत के। तैने दिखला दिया,
फंसे थे जाल में हर कौम को छुड़ा दिया ॥

मुर्दे भारत को जिन्दा बनाया तैने ॥ डूबे० ॥
बनाये शेर जो ऐसे धर्म पर लड़ रहे,
बिना हथियार मरने को सामने अड़ रहे ।
सभी फोके हुकूमत के मोर्चे पड़ रहे,
करें थे पाप जो उनके नशे अब भड़ रहे ॥

कैसा दुनिया में चक्क घुमाया तैने ॥ डूबे ॥
तेरे चक्कर से टोप वालों को भयवान हुआ,
अकल सब उड़ गई सबको आज खफखान हुआ ।
रहा जो बाहर कहने से तेरे हैरान हुआ,
लगी जब टक्करें "काले" कई फिर ज्ञान हुआ ॥

दुनिया में कैसी फिरी है माया तैने ॥ डूबे ॥

नं० १८ (धर्म का पालो-चाल मेरठी लहैर)

धर्म के डट जाओ पाले पै, सदा नहीं दुनिया में रहैना टिका
 धर्म पै जो कोई डटता आया, नाम दुनिया में उसने पाया ।
 कपट की हैं सारी माया, तीर कोई इससे ना पैना ॥ धर्म ॥
 छोड़ दो अधर्म के पाले को, तोड़ दो अंगरेजी जाले को ।
 कहै दो लंदन वाले को बक्त यहां अब पहले सा है ना ॥ धर्म ॥
 बहोत दिन लूट २ कर खाया ठग बाजी का जाल फलाया ।
 समझ में अब भारी आया अब थारा यहां दाव लगे ना ॥ धर्म ॥
 बिलटी यहां से कट गई थारी दुनिया चेतन होगई सारी ।
 कहें "काले" नर और नारी सब पैना आजादी गहैना ॥ धर्म ॥

नं० १९ (वालन्टीयर और कौमी गद्दार चाल मेरठी लहैर)

लगे करन बात आपस में एक वालन्टीयर और कौमी गद्दार टिका
 बा०-देश सेवक कहै बिगड़ी नीती, लगी सरकार करन अन रोती
 ये खून देश का पीसी कैसी अब्बल नम्बर है मक्कार ॥ लगे
 ग०- बात तू सारी झूठी कहता, राज अंगरेजी किसको देता ।
 नहीं देश हमारा रहता, जो अब तक यहां पर न होती सरकार ॥
 बा०-मतना झूठी बहस बढ़ाओ, फायदे अंगरेजी बतलाओ ।
 तुम मुझे बीर समझाओ कौनसी बात हुई थारे अख्तयार ॥

ग०—नहीं कुछ खतरा मौज उड़ावे हम अच्छे से अच्छा खावे

घर हाथ माल ले जावे ताकत नहीं चोर कोई देखे जार ॥

वा०—लूटकर काढ़ा खूब दिवाला चोर अब क्या करसकता साला

रहो जानता पहरेवाला चोर जब माल लूट हुआ घर से बाहर

ग०—रईसी घर २ कर दई जारी माल तक को रहै तयार सवारी ।

जहां को तबियत चाही बैठकर देशों में घूमो नरनार ॥लगे०

वा०—नहीं जब पैसा पास हमारे फीके डाठ नजर पड़े सारे ।

खाने तक नहीं गुजारे होय मरना अच्छा जीना धिक्कार ॥

जांच करो कौन लड़े है सच्चा कौनसा बात करन में कच्चा ।

जो कोई काम करे है अच्छा कहै "काले" उसकी नेया हो पार •

नं० २० (आग लगो नम्बरदारी में चाल मेरठी लहर)

रात दिन लड़ती घरवाली आग लगो नम्बरदारी में ॥टेका॥

जैसे आगई नम्बरदारी चीज गिरवी धर लीनी सारी ।

देते चपरासी गाली, सुनतो पड़े लाचारों में ॥ रात०

पासमें नहीं रहो एक पाई, घरों बैठे रहें रोज सिपाई ।

पिट गई सब तरियों ताली, गाँवों और रिस्तेदारीमें ॥ रात०

कैसे दिन गरदिसके आगये, चीज सब बेव २ कर खागये ।

रहेना चन्टे तक थाली, करज लारा कर हारी मैं ॥ रात०
 कहें "काले" देदे असतोफा, हमें ये चहाता नहीं वजीफा ।
 गांधी बाग तू बन माली, नाम हो दुनियां सारीमें ॥ रात०
 नम्बर २१ (नमकपर गांधीका धावा—चाल मेरठी लहैर)
 लेकरके उणासी वीरोंको गांधीने धावा बोल दिया ॥टेक॥
 क्रुद पड़ा आजादो रणमें, अहिंसा धारण करली मन में ।
 बारा मार्च तीसके सनमें, भेद सभीको खोल दिया ॥ लेकरके०
 दे ऐलान नमक किया त्यार, एक दम बिगड उठी सरकार ।
 धूमन लागे थानेदार, कही डण्डे किसीको पिस्तौल दिया ॥लोके०
 शुरू कर दिया डण्डा बरसाना, मोर्चा चार्हा बहुत हडाना ।
 परवो गांधी मरदाना, बनाकर नमक सामने तोल दिया ॥लोके०
 बना नमकको बेच दिखाया, जिसको सब पबलिकने खाया ।
 कहे "काले" भाव बढ़ाया, पानसोका एक तोला मोल दिया ॥लोके०

नम्बर २२ [गौत्रोंके मुताल्लिक—चाल मेरठी लहैर]

चलै गौत्रोंपर रोज कटार मुंह कैसे दिखलाते हो ॥ टेक ॥
 कहां गई ऋषियोंकी सन्तान, गऊ हो रही रोज कुरबान ।
 डूब मरो जीना है धिक्कार क्यों हिंदू कहलाते हो ॥ चले०
 दुनियासे छुतरापन उठ गया, देशका भरा खजाना लुट गया ।
 यूं हुई घर घर में हार, दुःख तुम जिससे ठाते हो ॥ चले०
 जिसके जरियेसे खाते हो, नजरों आगे मरवाते हो ।
 बिलकुल लई आवरुतार, स्याही टीका लाते हो ॥ चले०

हिन्दू मुसलिम लाओ रंछे, तोड़ दो मिलकर सभी कमेले ।
सुखी होजा सारा संसार, कहे "काले" जो चाहते हो ॥ चले०

नं० २३ । देवियों का गाना—चाल मेरठी लहैर]

देवियां भण्डा ठाके लड़ा आजादी मैदान ॥ टेक ॥

देवियां जो कहलाओ, देशपर तुम हो जाओ,

मेरी बहना सभी कुरबान ॥ देवियो०

काम ये पड़ा अधूरा, होयना तुम बिन पूरा,

करो खयाल आड़ा दो जान ॥ देवियो०

बनो सब सत्यवतीसी, द्रौपदी पारवतीसी,

जिन्हे जाने है सभी जिहान ॥ देवियो०

फर्ज कहे "काले" थारा, देश फन्देमें सारा,

दो काढ बचालो शान ॥ देवियो०

नं० २४ (सूतका गोला—मेरठी लहैर)

गोला बना ह सूतका भारी देश हमारे में ॥ टेक ॥

बनाया मिलकर नरनारीनें, मदद करी दुनिया सारीने ।

शक्ती इससे ना बढकर कारी, तेग दुधारे में ॥ गोला०

सूतका गोला पेसा डैत, तोप मसीने कर दई फेल ।

जिससे कोपी हकूमत सारी, शोरहुंवा सारे में ॥ गोला० ॥

जो दुशमन को भगाना चाहो, रात दिन इसको खूब चलाओ ।

कर दां घर २ में इसको जारी, जो जोश तुम्हारे में ॥ गोला

जब तो ये गोला बना निराला, "काले" कहै मारक पुरवाला ।

प्रभु मुझको है शरण तुम्हारी, रहूं मैं तेरे लारे में ॥ गोला०

नं० २५ (कवी का पता—चाल मेरठी लहर)

है जिला मेरा मेरठ मांजे मारकपुर को रहने वाला ॥ टेक ॥

बागपत की मेरी तहसील, खेखड़ा थाना है दो मील ।

है पानी का झील पास में, मसजिद मन्दिर और सिंगला ॥ है०

पास मसजिद मन्दिर ना दूर, कौम त्यागी ब्राह्मण मशहूर ।

मिलजा पता जरूर तिरंगा झण्डा घर पर है आला ॥ है०

देश सेवा करने का काम, घड़ी चौसठ और आठो घाम ।

लीनी सोच तमाम, जिंदगी लगे धर्म का जो पाला ॥ है०

काले चंदर जत्थेदार, घूम कर रोज करें प्रचार ।

यही पता है सार, खेखड़ा हलका जाट जहां लाला ॥ है०

* समाप्त *

हमारी पुस्तकें

आजादी की लहरें

वीरों की हुंकार

रोहतक के लोडरो का चित्र ॥

हम को ऐसे एजेंटों की
जरूरत है जो हमारी पुस्तक
वा फोटू घूम कर गा कर
बाहर शहरों में बेच सकें ।
कमीशन काफा देते हैं ।

पता:—सरज हिन्दी पुस्तकालय, सोनोपत रोहतक ।

मुख सुधार

‘वीरों की हुंकार’ पुस्तक में पहिले सफे में चौथी लार्सन में
चौ० काले के वजाय पंडित काले सिंह होना चाहिये ।